।।श्री।।

# ।। अन्नपूर्णाष्टकम् ।।

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिल घोरपापनिकरौ प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।
प्रालेयाचल वंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।१।।

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराढ्यंबरी
मुक्ताहारविडम्बमानविलसद्वक्षोजकुंभान्तरी ।
काश्मिरागरुवासिताङ्गरूचिरे काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।२।।

योगानंदकरी रिपुक्षयकरी धर्मैकनिष्ठाकरी
चंद्रार्कानल भासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।
सर्वैश्वर्यकरी तपःफलकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।३।।

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी ह्युमा शांकरी
कौमारीनिगमार्थकगोचरकरी ह्योंकारबीजाक्षरी ।
मोक्षद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।४।।

दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीला नाटकसूत्रलेखनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी ।
श्रीविश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।५।।

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शंभुप्रिया शांकरी
काश्मीरत्रिपुरेश्वरी त्रिनयनी विश्वेश्वरी शर्वरी ।
स्वर्गद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।६।।

उर्वीसर्वजनेश्वरी जयकरी माता कृपासागरी
नारीनील समानकुन्तलधरी नित्यान्नदानेश्वरी ।
साक्षान्मोक्षकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।७।।

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामा स्वादुपयोधरा प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।
भक्ताभीष्टकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।८।।

चन्द्रार्कानल कोटि कोटिसदृशी चन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्निसमानकेण्डलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।
मालापुस्तकपाशसाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।९।।

क्षत्रत्राणकरी महाभयहरी माता कृपासागरी
सर्वानन्दकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी ।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।१०।।

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकरप्राणवल्लभे ।
ज्ञानवैराग्यसिद्धर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ।।११।।

माताचपार्वतीदेवी पिता देवो महेश्वरः
बान्धवा शिवभक्ताच स्वदेशो भुवनत्रयम् ।।१२।।

**इति श्रीमद् गोविन्दपादशिष्यस्य श्रीमत्शंकररचितं**
**अन्नपूर्णाष्टकम्स्तोत्रम् संपूर्णम् ।।**

***************